खण्ड-442, अंक-1
गुरूवार, 17 श्रावण, शक संवत् 1924
(8 अगस्त, 2002 ई0)

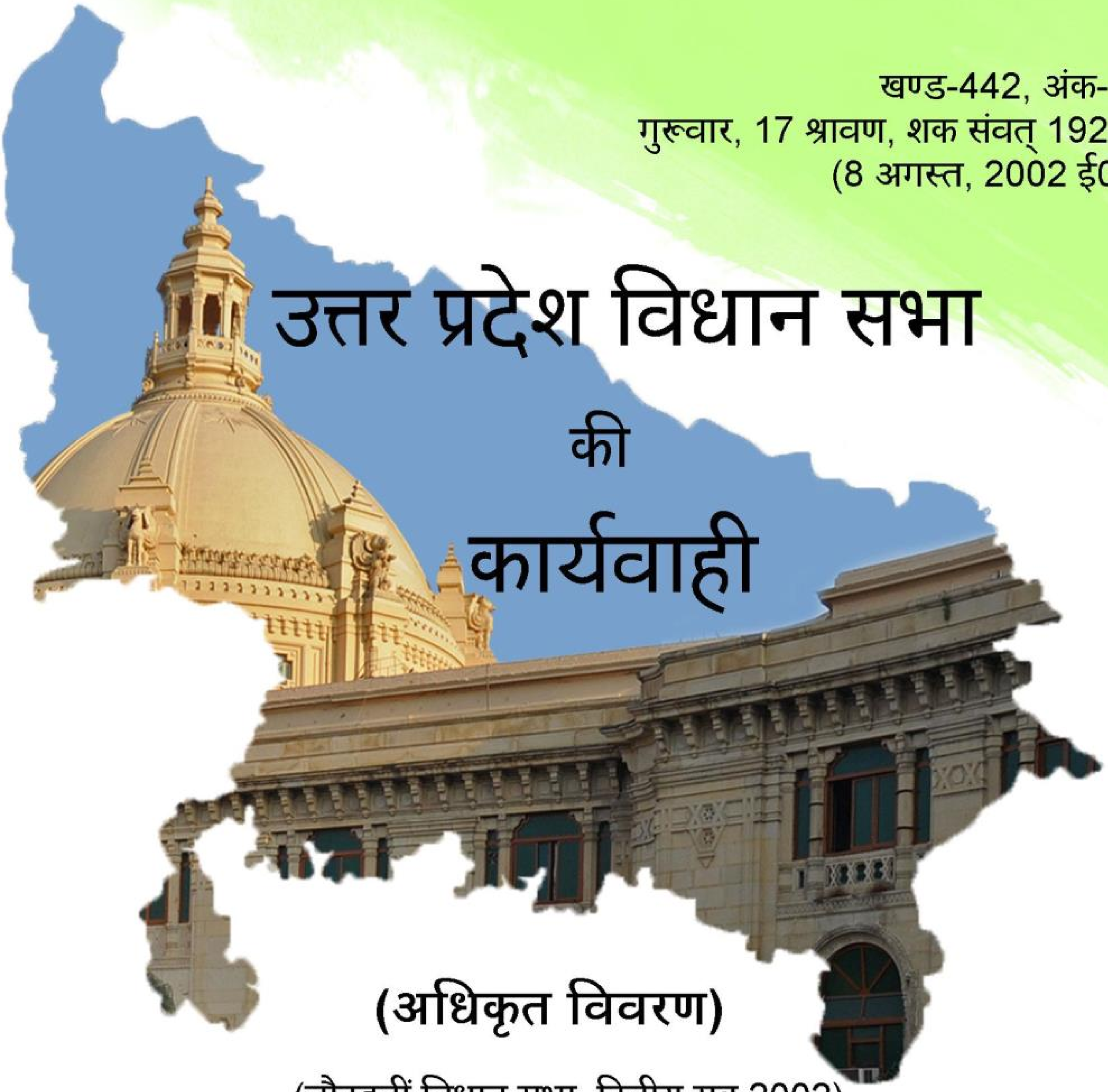

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, द्वितीय सत्र 2002)

खण्ड 442 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
2002

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
चौदहवीं विधान सभा के सदस्यों की सूची, महामहिम राज्यपाल, मंत्रि-परिषद्, नेता विरोधी दल, उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल की सूची	क–ञ
उपस्थित सदस्य	ट
राष्ट्रीय-गीत	1
भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त एवं पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती के निधन पर शोकोद्गार	1–11
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्यगण श्री राम चन्दर, श्री विष्णु दयाल वर्मा, श्री राम प्यारे शुक्ल, श्री कन्हैया लाल सोनकर, श्री शिव कुमार पाण्डेय, श्री नगीना सिंह, श्री राम सिंह चौहान, श्री मोहम्मद मसूद खां तथा श्री हरिपाल सिंह शास्त्री के निधन पर शोकोद्गार	11-14

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्यों की सूची

(चौदहवीं विधान सभा)

1–अकीलुर्रहमान खां, श्री — मुरादाबाद
2–अक्षयवर लाल, श्री — बहराइच
3–अखिलेश कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
4–अजय कपूर, श्री — कानपुर नगर
5–अजय कुमार, श्री — बागपत
6–अजय राय, श्री — वाराणसी
7–अजीत कुमार उर्फ राजू यादव, श्री — बदायूं
8–अजीम भाई, श्री — फिरोजाबाद
9–अताउल रहमान, श्री — बरेली
10–अतीक अहमद, श्री — इलाहाबाद
11–अनवर महमूद, श्री — बलरामपुर
12–अनार सिंह दिवाकर, श्री — एटा
13–अनिल कुमार, श्री — बुलन्दशहर
14–अनिल कुमार पाण्डेय, श्री — सुल्तानपुर
15–अनिल कुमार मौर्य, श्री — मिर्जापुर
16–अनिल कुमार वर्मा, श्री — सीतापुर
17–अनिल कुमार वर्मा, श्री — हरदोई
18–अनिल कुमार सिंह यादव, श्री — एटा
19–अनिल सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
20–अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री — पीलीभीत
21–अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री — देवरिया
22–अनुराधा चौधरी, सुश्री — मुजफ्फरनगर
23–अनूप कुमार पाण्डेय, श्री — बस्ती
24–अन्सार अहमद, श्री — इलाहाबाद
25–अब्दुल कलाम, श्री — वाराणसी
26–अब्दुल कलाम, श्री — संत कबीर नगर
27–अब्दुल मन्नान, श्री — हरदोई
28–अब्बास अली जैदी उर्फ रुशदी मियां, श्री — बाराबंकी
29–अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री — फतेहपुर
30–अमरमणि, श्री — महराजगंज
31–अमर सिंह यादव पुत्र श्री सुन्दर सिंह, श्री — हाथरस
32–अमिता सिंह, श्रीमती — सुल्तानपुर
33–अम्बिका चौधरी, श्री — बलिया
34–अम्बेश कुमारी, श्रीमती — महोबा
35–अयोध्या प्रसाद पाल, श्री — फतेहपुर
36–अरविन्द गिरि, श्री — खीरी
37–अरुण कुमार मेहरोत्रा, डा० — जालौन
38–अरुण कुमारी, सुश्री — कानपुर देहात
39–अरुणवीर सिंह, श्री — बहराइच
40–अरुणा तोमर, सुश्री — कानपुर नगर
41–अली बहादुर, श्री — बहराइच
42–अवधेश कुमार वर्मा, श्री — शाहजहांपुर
43–अवधेश प्रसाद, श्री — फैजाबाद
44–अशोक कुमार कटियार, श्री — कानपुर देहात
45–अशोक बाजपेयी, डा० — हरदोई
46–अशोक सिंह चौहान, श्री — मैनपुरी
47–आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री — सिद्धार्थनगर
48–आनन्द प्रकाश लोधी, श्री — फतेहपुर
49–आनन्द सेन, श्री — फैजाबाद
50–आर०एस० कुशवाहा, श्री — खीरी
51–आर० के० चौधरी, श्री — लखनऊ

उत्तर प्रदेश विधान सभा

52–आर०के० सिंह पटेल, श्री चित्रकूट
53–आलम बदी, श्री आजमगढ़
54–आलोक कुमार शाक्य, श्री मैनपुरी
55–आशा किशोर, सुश्री रायबरेली
56–आशीष यादव, श्री बदायूं
57–आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री बदायूं
58–इकबाल महमूद, श्री मुरादाबाद
59–इन्द्रजीत सरोज, श्री कौशाम्बी
60–इन्द्रदेव सिंह, डा० बिजनौर
61–इलम सिंह, श्री सहारनपुर
62–उदयभान करवरिया, श्री इलाहाबाद
63–उदयभान सिंह, श्री वाराणसी
64–उदयराज, श्री उन्नाव
65–उमा किरन, श्रीमती मुजफ्फरनगर
66–उमा शंकर कुशवाहा, श्री गाजीपुर
67–ऊषा वर्मा, श्रीमती हरदोई
68–ओइमवेश, स्वामी, बिजनौर
69–ओमकार सिंह यादव, श्री बदायूं
70–ओम प्रकाश, श्री गाजीपुर
71–ओम प्रकाश, श्री सीतापुर
72–ओम प्रकाश (ओ० पी० सिंह), श्री सुल्तानपुर
73–ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री सुल्तानपुर
74–ओम प्रकाश सिंह, श्री मिर्जापुर
75–ओमवती देवी, श्रीमती बिजनौर
76–कपिल देव यादव, श्री मऊ
77–कमला प्रसाद रावत, श्री बाराबंकी
78–कमलेश कुमार पासवान, श्री गोरखपुर
79–कमलेश कुमार पाठक, श्री कानपुर देहात
80–कमाल यूसुफ मलिकं, श्री सिद्धार्थनगर
81–कल्याण सिंह, श्री अलीगढ़
82–कल्याण सिंह दोहरे, श्री कन्नौज
83–काजिम अली खां उर्फ नवेदं मियां, नवाब रामपुर
84–कामेश्वर उपाध्याय, श्री देवरिया
85–कालीचरन राजभर, श्री गाजीपुर
86–काशी राम, श्री रामपुर
87–किरण पाल कश्यप, श्री मुजफ्फरनगर
88–किरणपाल सिंह, श्री बुलन्दशहर
89–किशन लाल बघेल, सेठ आगरा
90–कुतुबुद्दीन, श्री बिजनौर
91–कुलदीप सिंह सेंगर, श्री उन्नाव
92–कृष्ण कुमार सिंह उर्फ सतीश वर्मा, श्री हरदोई
93–कृष्णानन्द, श्री गाजीपुर
94–कृष्णा पासवान, सुश्री फतेहपुर
95–केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री इलाहाबाद
96–कैलाश, श्री गाजीपुर
97–कैलाश चौरसिया, श्री मिर्जापुर
98–कैलाश नाथ सिंह यादव, श्री वाराणसी
99–कोविद कुमार, श्री शाहजहांपुर
100–कौकब हमीद खां, श्री बागपत
101–कौशल किशोर, श्री खीरी
102–कौशल किशोर, श्री लखनऊ
103–गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री आगरा
104–गंगा बक्श सिंह, श्री उन्नाव
105–गंगा भक्त सिंह, श्री हरदोई
106–गया चरन दिनकर, श्री बांदा
107–गीता सिंह, श्रीमती बलरामपुर
108–गुलाब देवी, श्रीमती मुरादाबाद
109–घनश्याम शुक्ल, श्री गोण्डा
110–घूरा राम, श्री बलिया
111–चन्द्र किशोर, श्री महराजगंज
112–चन्द्रदेव राम यादव करैली, श्री आजमगढ़

113–चन्द्र भद्र सिंह, श्री — सुल्तानपुर
114–चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री — श्रावस्ती
115–चितरंजन स्वरूप, श्री — मुजफ्फरनगर
116–चौधरी बाबूलाल, श्री — आगरा
117–छेदी राम, श्री — गाजीपुर
118–छोटे लाल यादव, श्री — बाराबंकी
119–छोटे लाल वर्मा, श्री — आगरा
120–जगदम्बिका पाल, श्री — बस्ती
121–जगदीश नारायण (राय), श्री — जौनपुर
122–जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री — कुशीनगर/पडरौना
123–जगदीश सिंह राणा, श्री — सहारनपुर
124–जगदीश सोनकर, श्री — जौनपुर
125–जगन प्रसाद गर्ग, श्री — आगरा
126–जगराम, श्री — मुरादाबाद
127–जटाशंकर सिंह, श्री — बहराइच
128–जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री — फर्रुखाबाद
129–जय प्रकाश यादव, श्री — गोरखपुर
130–जय प्रताप सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
131–जयराम विमल, श्री — अम्बेडकर नगर
132–जयवीर सिंह, श्री — मैनपुरी
133–जयवीर सिंह, ठाकुर — अलीगढ़
134–जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया, श्री — गोरखपुर
135–जियाउद्दीन रिजवी, श्री — बलिया
136–ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री — महराजगंज
137–तेजपाल सिंह, श्री — मथुरा
138–दद्दू प्रसाद, श्री — चित्रकूट
139–दयाराम, श्री — कौशाम्बी
140–दया शंकर वर्मा, श्री — जालौन
141–दिनेश सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
142–दीनानाथ कुशवाहा, श्री — देवरिया
143–दीनानाथ भास्कर, श्री — सन्त रविदास नगर,भदोही
144–दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री — देवरिया
145–दुर्गा प्रसाद यादव, श्री — आजमगढ़
146–देवकी नन्दन, श्री — हाथरस
147–देव नारायन उर्फ जी०एम० सिंह, श्री — गोरखपुर
148–देवेन्द्र नागपाल, श्री — ज्योतिबाफूले नगर
149–देवेन्द्र प्रताप, श्री — एटा
150–देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री — रायबरेली
151–द्वारिका प्रसाद, श्री — सन्त कबीर नगर
152–धनंजय सिंह, श्री — जौनपुर
153–धर्मपाल सिंह, श्री — गाजियाबाद
154–धर्मपाल सिंह, श्री — बरेली
155–धर्मराज निषाद, श्री — अम्बेडकर नगर
156–धर्म सिंह सैनी, डा० — सहारनपुर
157–धर्मेन्द्र कुमार, श्री — बरेली
158–धू राम, श्री — हमीरपुर
159–नत्थू सिंह, श्री — उन्नाव
160–नरेन्द्र कुमार, श्री — गौतमबुद्ध नगर
161–नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा० — इलाहाबाद
162–नरेन्द्र सिंह वर्मा, श्री — सीतापुर
163–नरेन्द्र सिंह यादव, श्री — फर्रुखाबाद
164–नरेन्द्र सिंह सिसौदिया, श्री — गाजियाबाद
165–नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री — हरदोई
166–नवाब सिंह नागर, श्री — गौतमबुद्ध नगर
167–नारद राय, श्री — बलिया
168–नूर मोहम्मद, श्री — सुल्तानपुर
169–पकौड़ी लाल, श्री — मिर्जापुर
170–परमेश्वर दयाल, श्री — सोनभद्र
171–पारस नाथ यादव, श्री — जौनपुर
172–पी० के० राय, डा० — कुशीनगर/पडरौना

उत्तर प्रदेश विधान सभा

173–पीटर फैन्थम, श्री — नाम-निर्देशित
174–पीतम राम, श्री — पीलीभीत
175–पूरन सिंह बुन्देला, श्री — ललितपुर
176–पूर्णमासी देहाती, श्री — कुशीनगर/पडरौना
177–प्रताप चौधरी, श्री — हाथरस
178–प्रदीप माथुर, श्री — मथुरा
179–प्रभु दयाल, श्री — मेरठ
180–प्रभु नारायण, श्री — वाराणसी
181–प्रमोद कुमार, श्री — प्रतापगढ़
182–प्रमोद गौड़, श्री — अलीगढ़
183–प्रागी लाल अहिरवार, श्री — झांसी
184–प्रेम पाल सिंह यादव, श्री — बदायूं
185–प्रेम लता कटियार, श्रीमती — कानपुर नगर
186–प्रेम सिंह, श्री — मथुरा
187–फतेह बहादुर, श्री — महराजगंज
188–फसीहा मुराद लारी उर्फ गजाला, श्रीमती — देवरिया
189–फागू, श्री — मऊ
190–बंशीधर राज, श्री — खीरी
191–बलराम यादव, श्री — आजमगढ़
192–बादशाह सिंह, श्री — हमीरपुर
193–बाबू राम, एम०काम०, श्री — जालौन
194–बाबू लाल, श्री — गोण्डा
195–बाबू लाल कुशवाहा, श्री — बांदा
196–बिजय सिंह, श्री — फर्रुखाबाद
197–बीजू पटनायक, श्री — गाजीपुर
198–बीना भारद्वाज, श्रीमती — रामपुर
199–बृजेन्द्र कुमार व्यास (डमडम महराज), श्री — झांसी
200–बृजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री — जालौन
201–बैजनाथ पासवान, श्री — मऊ
202–बैजनाथ दुबे, श्री — गोण्डा
203–ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी, श्री — देवरिया
204–भगवत शरन गंगवार, श्री — बरेली
205–भगेलू राम, श्री — सुल्तानपुर
206–भरत सिंह, श्री — बलिया
207–भरतेन्द्र सिंह, कुंवर — बिजनौर
208–भूपेन्द्र सिंह, श्री — बदायूं
209–मुंशीलाल गौतम, श्री — बुलन्दशहर
210–मतेश चन्द्र सोनकर, श्री — कौशाम्बी
211–मदन गोपाल वर्मा, श्री — फतेहपुर
212–मदन चौहान, श्री — गाजियाबाद
213–मदन भैया, श्री — बागपत
214–मदन सिंह उर्फ सन्तोष कुमार, श्री — इटावा
215–मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री — रायबरेली
216–मलिक मसूद, श्री — आजमगढ़
217–मशहूद खां, श्री — बलरामपुर
218–मस्त राम, श्री — उन्नाव
219–महबूब अली, श्री — ज्योतिबाफूलेनगर
220–महेन्द्र अरिदमन सिंह राजा, श्री — आगरा
221–महेन्द्र कुमार सिंह उर्फ झीनबाबू, श्री — सीतापुर
222–महेन्द्र सिंह, श्री — अलीगढ़
223–महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
224–महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री — इटावा
225–महेश चन्द्र, श्री — कानपुर देहात
226–महेश नारायण सिंह, श्री — इलाहाबाद
227–माता प्रसाद पाण्डेय, श्री — सिद्धार्थनगर
228–मान पाल सिंह, श्री — एटा
229–माया प्रसाद, श्रीमती — खीरी
230–मायावती, सुश्री — सहारनपुर
231–मिथिलेश कुमार, श्री — शाहजहांपुर
232–मुकुट बिहारी वर्मा, श्री — बहराइच
233–मुस्ताक सोलंकी, हाजी — कानपुर नगर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

234–मूलचन्द्र, श्री — बिजनौर
235–मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ
236–मोहन देव शंखवार, श्री — फिरोजाबाद
237–मोहम्मद आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री — मुरादाबाद
238–मोहम्मद आजम खां, श्री — रामपुर
239–मोहम्मद इरशाद खां, श्री — लखनऊ
240—मोहम्मद बशीर, श्री — आगरा
241—मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी, श्री — इलाहाबाद
242—मोहम्मद रिजवान, श्री — मुरादाबाद
243—मो० शफीर, श्री — फतेहपुर
244–यशपाल चौधरी, श्री — खीरी
245–यशवन्त सिंह, डा० — मुजफ्फरनगर
246–याकूब, हाजी — मेरठ
247–योगेन्द्र कुमार, श्री — बदायूं
248–योगेश प्रताप सिंह उर्फ योगेश भइया, श्री — गोण्डा
249–रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया, श्री — प्रतापगढ़
250–रणवीर राणा, श्री — मेरठ
251–रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर — कुशीनगर/पडरौना
252–रतन लाल अहिरवार, श्री — झांसी
253–रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री — कुशीनगर/पडरौना
254–रमेश कान्त लवानिया, श्री — आगरा
255–रमेश कुमार शर्मा, श्री — झांसी
256–रमेश चन्द बिन्द, डा० — मिर्जापुर
257–रविन्द्र पुण्डीर, प्रो० — मेरठ
258–राकेश कुमार वर्मा, श्री — बाराबंकी
259–राकेश पाण्डेय, श्री — अम्बेडकर नगर
260–राकेश सचान, श्री — कानपुर देहात
261–राज किशोर सिंह, श्री — बस्ती
262–राज नाथ सिंह, श्री — बाराबंकी
263–राजपाल त्यागी, श्री — गाजियाबाद
264–राजपाल सिंह बालियान, श्री — मुजफ्फरनगर
265–राजपाल सिंह सैनी, श्री — मुजफ्फरनगर
266–राजरानी, सुश्री — बाराबंकी
267–राजलक्ष्मी वर्मा, श्रीमती — बाराबंकी
268–राजवीर सिंह, श्री — बुलन्दशहर
269–राजा राम, श्री — प्रतापगढ़
270–राजीव कुमार सिंह, श्री — बाराबंकी
271–राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री — प्रतापगढ़
272–राजेन्द्र प्रसाद यादव, श्री — लखनऊ
273–राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री — एटा
274–राजेन्द्र सिंह राणा, श्री — सहारनपुर
275–राजेश अग्रवाल, श्री — बरेली
276–राजेश कुमार, श्री — खीरी
277–राधा मोहन दास अग्रवाल, डा० — गोरखपुर
278–राधेश्याम जायसवाल, श्री — सीतापुर
279–राधेश्याम सिंह, श्री — कुशीनगर/पडरौना
280–राम अचल राजभर, श्री — अम्बेडकर नगर
281–राम इकबाल, श्री — बलिया
282–राम करन आर्य, श्री — बस्ती
283–राम किशुन, श्री — वाराणसी
284–राम कृपाल, श्री — इलाहाबाद
285–राम कृष्ण, श्री — सीतापुर
286–राम गोविन्द चौधरी, श्री — बलिया
287–रामजीत राजभर, श्री — वाराणसी
288–रामजी शुक्ला, श्री — औरैया
289–राम नरेश यादव, श्री — आजमगढ़
290–रामनाथ, श्री — प्रतापगढ़

उत्तर प्रदेश विधान सभा

291–रामपाल यादव, श्री सीतापुर
292–राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री कन्नौज
293–राम प्रताप सिंह, श्री गोण्डा
294–राम प्रसाद चौधरी, श्री बस्ती
295–राम बाबू हरित, डा० आगरा
296–राम बिशुन आजाद, श्री गोण्डा
297–राम भुआल, श्री गोरखपुर
298–राम लाल अकेला, श्री रायबरेली
299–रामवीर उपाध्याय, श्री हाथरस
300–रामवीर सिंह, श्री फिरोजाबाद
301–राम शंकर पाल, श्री उन्नाव
302–राम सेवक, श्री सुल्तानपुर
303–राम स्वरूप सिंह, श्री कानपुर देहात
304–राम स्वरूप सिंह, श्री बिजनौर
305–रामहेत, श्री सीतापुर
306–रामेश्वर सिंह यादव, श्री एटा
307–रिजवान अहमद खां, श्री ज्योतिबा फूले नगर
308–रियाज अहमद, श्री पीलीभीत
309–रेवती रमण सिंह, कुं० इलाहाबाद
310–लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा० मेरठ
311–लल्लू सिंह, श्री फैजाबाद
312–लालजी टण्डन, श्री लखनऊ
313–लालजी वर्मा, श्री अम्बेडकर नगर
314–लाल बहादुर यादव, श्री जौनपुर
315–लुईस खुर्शीद, श्रीमती फर्रुखाबाद
316–वकार अहमद शाह, डा० बहराइच
317–वसीम अहमद, श्री आजमगढ़
318–विजमा यादव, श्रीमती इलाहाबाद
319–विजय कुमार मिश्रा, श्री सन्त रविदास नगर भदोही
320–विजय बहादुर पाल, श्री फर्रुखाबाद
321–विजय सिंह, श्री सोनभद्र
322–विजेन्द्र सिंह, श्री हाथरस
323–विद्या चौधरी, श्री आजमगढ़
324–विद्या सागर गुप्ता, श्री लखनऊ
325–विनय शाक्य, श्री औरैया
326–विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री गोण्डा
327–विनोद कुमार यादव कक्का, श्री इटावा
328–विनोद कुमार सिंह, श्री जौनपुर
329–विनोद तिवारी, डा० पीलीभीत
330–विमल कृष्ण अग्रवाल, उर्फ पप्पी, श्री बदायूं
331–विवेक बंसल, श्री अलीगढ़
332–विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री बांदा
333–विश्राम सिंह यादव, श्री हरदोई
334–वीरेन्द्र प्रताप सिंह मुन्ना, श्री शाहजहांपुर
335–वीरेन्द्र सिंह, श्री बरेली
336–वीरेन्द्र सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
337–वीरेन्द्र सिंह बुन्देला 'भगत राजा', श्री ललितपुर
338–वीरेश्वर, श्री अलीगढ़
339–वेदराम भाटी, श्री बुलन्दशहर
340–शंख लाल मांझी, श्री सन्त कबीर नगर
341–शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री सन्त रविदास नगर भदोही
342–शब्बीर, श्री बहराइच
343–शमीमुल हक, श्री मुरादाबाद
344–शरदवीर सिंह, श्री शाहजहांपुर
345–शहजिल इस्लाम, श्री बरेली
346–शाकिर अली, श्री देवरिया
347–शारदा देवी, श्रीमती गोरखपुर
348–शारदा नन्द अंचल, श्री बलिया
349–शारदा प्रसाद, श्री चन्दौली

350–शाहिद मंजूर, श्री मेरठ
351–शिव कुमार बेरिया, श्री कानपुर देहात
352–शिव चरन, श्री हमीरपुर
353–शिव तपस्या पासवान, श्री चन्दौली
354–शिव पाल सिंह यादव, श्री इटावा
355–शिव प्रताप यादव, डा० बलरामपुर
356–शिवाकान्त ओझा, प्रोफेसर प्रतापगढ़
357–शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री महराजगंज
358–शिशुपाल सिंह यादव, श्री एटा
359–शैलेन्द्र यादव "ललई", श्री जौनपुर
360–श्याम सिंह अहेरिया, श्री मथुरा
361–श्याम देव राय चौधरी, श्री वाराणसी
362–श्याम नारायन, श्री महराजगंज
363–श्याम लाल रावत, श्री सीतापुर
364–श्याम सुन्दर शर्मा, श्री मथुरा
365–श्याम सूरत उपाध्याय, श्री इलाहाबाद
366–संजय गर्ग, श्री सहारनपुर
367–संजीव दरियाबादी, श्री कानपुर नगर
368–संदीप अग्रवाल, श्री मुरादाबाद
369–सतीश महाना, श्री कानपुर नगर
370–सत्य प्रकाश अग्रवाल (कैलाश डेरी वाले), श्री मेरठ
371–सदल प्रसाद, श्री गोरखपुर
372–सत्य नारायण, श्री हरदोई
373–संध्या कठेरिया, सुश्री मैनपुरी
374–समरपाल सिंह, श्री बागपत
375–सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुं० मुरादाबाद
376–सलिल विशनोई, श्री कानपुर नगर
377–सिद्ध गोपाल साहू, श्री महोबा
378–सियाराम सागर, डा० बरेली
379–सीताराम निषाद, श्री फैजाबाद
380–सुखदेव राजभर, श्री आजमगढ़
381–सुख देवी वर्मा, श्रीमती इटावा
382–सुन्दर लाल, श्री उन्नाव
383–सुन्दर सिंह, श्री बुलन्दशहर
384–सुरेन्द्र पाल वर्मा, डा० बांदा
385–सुरेन्द्र प्रकाश गोयल, श्री गाजियाबाद
386–सुरेन्द्र प्रताप, श्री जौनपुर
387–सुरेन्द्र विक्रम सिंह, श्री रायबरेली
388–सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री वाराणसी
389–सुरेश कुमार खन्ना, श्री शाहजहांपुर
390–सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री लखनऊ
391–सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री लखनऊ
392–सुल्तान बेग, श्री बरेली
393–सुशील चौधरी, डा० सहारनपुर
394–सूरज सिंह शाक्य, श्री एटा
395–सोमारू राम सरोज, श्री जौनपुर
396–सोवरन सिंह, श्री मैनपुरी
397–स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री रायबरेली
398–हरि ओम यादव, श्री फिरोजाबाद
399–हरि प्रताप सिंह, श्री प्रतापगढ़
400–हरिशंकर तिवारी, श्री गोरखपुर
401–हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी", श्री वाराणसी
402–हीरा लाल गौतम, श्री आजमगढ़
403–हुकुम सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
404–होशियार सिंह, श्री बुलन्दशहर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

महामहिम राज्यपाल

श्री विष्णुकान्त शास्त्री

मंत्रि-परिषद्

क्रमांक	नाम	कार्य विभाग (पोर्ट फोलियो)
1	2	3
1–सुश्री मायावती (मुख्य मंत्री)		सामान्य प्रशासन, गृह, गोपन, नियुक्ति, कार्मिक, सूचना, निर्वाचन, वित्त, न्याय, विधायी, बेसिक शिक्षा, ग्राम्य विकास, नियोजन, प्रोटोकाल, नागरिक उड्डयन, अम्बेडकर ग्राम विकास, राज्य सम्पत्ति, उद्यान, अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ, भूमि विकास एवं जल संसाधन, परती भूमि विकास, संस्कृति, खेलकूद, लघु सिंचाई, विकलांग कल्याण, बैंकिंग, नागरिक सुरक्षा, युवा कल्याण, प्रान्तीय विकास दल, वाह्य सहायतित परियोजना, कारागार, राजनैतिक पेंशन, चिकित्सा शिक्षा।
2–श्री लालजी टण्डन		आवास, नगर विकास, पर्यटन, श्रम, संस्थागत वित्त, दुग्ध विकास, पशुधन, वैकल्पिक ऊर्जा
3–श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी		परिवहन, पर्यावरण, आबकारी औद्योगिक विकास, निर्यात प्रोत्साहन
4–श्री ओम प्रकाश सिंह		सिंचाई, गन्ना विकास, उच्च शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, भाषा, राष्ट्रीय एकीकरण, कार्यक्रम कार्यान्वयन
5–श्री कैलाश नाथ सिंह यादव		विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
6–श्री राम प्रकाश त्रिपाठी		सहकारिता
7–श्री इन्द्रजीत सरोज		समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण, महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार
8–श्री महेन्द्र अरिदमन सिंह		स्वास्थ्य एवं चिकित्सा
9–श्री सुखदेव राजभर		संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग, रेशम उद्योग
10–श्री हुकुम सिंह		कृषि, पंचायती राज
11–श्री स्वामी प्रसाद मौर्य		खादी एवं ग्रामीण उद्योग
12–श्री कौकब हमीद		ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा
13–श्री रामवीर उपाध्याय		ऊर्जा,
14–श्रीमती अनुराधा चौधरी		लोक निर्माण
15–श्री लाल जी वर्मा		सार्वजनिक उद्यम
16–श्री रवि गौतम		राजस्व
17–श्री ठाकुर जयवीर सिंह		वन
18–श्री बाबूराम एम० काम०		खाद्य एवं रसद
19–श्री जगदीश नारायण राय		लघु उद्योग

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

क्रमांक नाम	कार्य विभाग (पोर्ट फोलियो)
1–डा० शीमा रिजवी	इलेक्ट्रानिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी
2–श्री अनीस अहमद खान उर्फ फूलबाबू	कृषि शिक्षा
3–श्री अक्षयवर गौड़	होमगार्ड्स
4–श्री राम भुआल (निषाद)	पिछड़ा वर्ग कल्याण

नेता विरोधी दल,

श्री मोहम्मद आजम खाँ

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष

श्री केशरीनाथ त्रिपाठी

उपाध्यक्ष

रिक्त

सचिव

श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

अधिष्ठाता मण्डल

1–श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी", सदस्य, विधान सभा, (वाराणसी),
2–डा० लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, सदस्य, विधान सभा (मेरठ),
3–डा० सुरेन्द्र पाल वर्मा, सदस्य, विधान सभा (बांदा),
4–श्री भगेलू राम, सदस्य, विधान सभा (सुल्तानपुर),
5–डा० अशोक बाजपेयी, सदस्य, विधान सभा (हरदोई),
6–श्री सीताराम निषाद, सदस्य, विधान सभा (फैजाबाद),
7–डा० वकार अहमद शाह, सदस्य, विधान सभा (बहराइच),
8–श्री श्याम सूरत उपाध्याय, सदस्य, विधान सभा (इलाहाबाद),
9–श्री वीरेन्द्र सिंह, सदस्य, विधान सभा (मुजफ्फरनगर)।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(चौदहवीं विधान सभा)

गुरुवार, दिनांक 08 अगस्त, 2002

निम्नलिखित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :—

1–अखिलेश कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
2–अतीक अहमद, श्री — इलाहाबाद
3–अनिल कुमार, श्री — बुलन्दशहर
4–अम्बिका चौधरी, श्री — बलिया
5–आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री — सिद्धार्थनगर
6–आनन्द सेन, श्री — फैजाबाद
7–उदयभान सिंह, श्री — वाराणसी
8–ओम प्रकाश, श्री — गाजीपुर
9–कमलेश कुमार पासवान, श्री — गोरखपुर
10–कमलेश कुमार पाठक, श्री — कानपुर देहात
11–काजिम अली खां उर्फ नवेद मियां, नवाब — रामपुर
12–कैलाश चौरसिया, श्री — मिर्जापुर
13–चन्द्र किशोर, श्री — महराजगंज
14–चन्द्र भद्र सिंह, श्री — सुल्तानपुर
15–जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री — फर्रुखाबाद
16–जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया, श्री — गोरखपुर
17–नरेन्द्र सिंह यादव, श्री — फर्रुखाबाद
18–नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री — हरदोई
19–परमेश्वर दयाल, श्री — सोनभद्र
20–पूरन सिंह बुन्देला, श्री — ललितपुर
21–बादशाह सिंह, श्री — हमीरपुर
22–मदन भैया, श्री — बागपत
23–मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री — रायबरेली
24–महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
25–मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ
26–रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया, श्री — प्रतापगढ़
27–राजनाथ सिंह, श्री — बाराबंकी
28–राजपाल सिंह बालियान, श्री — मुजफ्फरनगर
29–राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री — कन्नौज
30–रेवती रमण सिंह, कुं० — इलाहाबाद
31–विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री — गोण्डा
32–सतीश महाना, श्री — कानपुर नगर
33–समरपाल सिंह, श्री — बागपत
34–सुन्दर सिंह, श्री — बुलन्दशहर
35–सोवरन सिंह, श्री — मैनपुरी
36–स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री — रायबरेली
37–हरि ओम यादव, श्री — फिरोजाबाद

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गुरुवार, दिनांक 08 अगस्त, 2002

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

राष्ट्रीय-गीत

श्री अध्यक्ष–

चौदहवीं विधान सभा के दूसरे सत्र में सभी माननीय सदस्यों का स्वागत है और आज की कार्यवाही वन्दे मातरम् से प्रारम्भ करेंगे । आप सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया अपने स्थान पर खड़े हो जायें ।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

सुजलाम् ।

सुफलाम् ।

मलयज शीतलाम् ।

शस्य श्यामलाम् ।

मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

शुभ्र–ज्योत्सना–पुलकित–यामिनीम्

फुल्ल–कुसुमित–द्रुमदल–शोभिनीम्

सुहासिनीम्

सुमधुर भाषिणीम्

सुखदाम्

वरदाम्

मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त एवं पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती के निधन पर शोकोद्गार

श्री अध्यक्ष–

अब हम कार्यसूची की दूसरी मद लेते हैं ।

*मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी, भारत के उपराष्ट्रपति, श्री कृष्णकान्त जी का देहान्त उपराष्ट्रपति के पद पर रहते हुए पिछले महीने की 27 जुलाई को दिल का दौरा पड़ने के कारण हो गया था । वे लगभग 75 वर्ष

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

के थे । इनका जन्म 28 जनवरी, 1927 को पंजाब में अमृतसर जिले के तरनतारन तहसील के देहात में हुआ था । इन्होंने छात्र जीवन से ही देश की आजादी के लिए काफी संघर्ष किया और भारत छोड़ो आन्दोलन में भी भाग लिया जिसके तहत वे जेल भी गये । राजनीतिक क्षेत्र में भी इनका सराहनीय योगदान रहा है । पार्लियामेन्ट में दोनों सदनों के ये सदस्य भी रहे । एक बार राज्य सभा और दूसरी बार लोकसभा के सदस्य रहे । इन्होंने राजनीतिक क्षेत्र के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में भी गहरी आस्था को रखा । इनकी इसमें भी दिलचस्पी थी । वे आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल भी रहे और उसके बाद देश के उपराष्ट्रपति बने । इनके निधन से देश ने एक प्रखर संसदविद्, एक महान देशभक्त और एक गांधीवादी नेता को खो दिया है । माननीय अध्यक्ष जी, आपसे अनुरोध है कि इनके निधन पर इनके शोक-संतप्त परिवार तक पूरे सदन की ओर से और मेरे और मेरे दल की ओर से शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

माननीय अध्यक्ष जी, भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती जी का देहान्त 7 जून, 2002 को बंगलौर में हुआ था । वह राजनीतिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे । 1968 में पाण्डिचेरी के उपराज्यपाल बने और 1972 में उड़ीसा के राज्यपाल नियुक्त हुए । इसके बाद 1974 में वह भारत के उपराष्ट्रपति बने । 1977 में कुछ समय के लिए कार्यवाहक राष्ट्रपति भी बने थे । उनकी धर्म और सामाजिक क्षेत्र में काफी रुचि थी । उनके निधन से देश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ और सामाजिक नेता को खो दिया है । अध्यक्ष जी आपसे अनुरोध है कि इस सदन की ओर से और मेरे अपने दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार को शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

*नेता विरोधी दल (श्री मोहम्मद आजम खां)–

माननीय अध्यक्ष जी, 27 जुलाई, 2002 को 75 वर्षीय एक शीर्ष राजनेता का निधन हो गया । उनका जन्म 28 फरवरी, 1927 को मोहम्मद खान गांव में एक ऐसी तहसील में हुआ था जो राजनीतिक और धार्मिक तौर पर तरनतारन के नाम से जानी जाती है । मुझे राज्यसभा में उनकी अध्यक्षता में बहुत कुछ सीखने का मौका मिला । यह 1966 से 1977 तक दो बार राज्य सभा के सदस्य रहे और उसके बाद तीसरी बार उपराष्ट्रपति के तौर पर हमारे अध्यक्ष रहे । जाहिर है इतने ऊंचे पद पर पहुंचने के लिए उनमें जरूर कोई खासियत रही होगी और उस खासियत का पता तभी चल सकता है जब कोई उनके संपर्क में रहे । वह सिर्फ शक्ल के ही खूबसूरत नहीं थे । बल्कि अपनी आवाज से अपने कामकाज से एक हसीन शख्सियत के मालिक थे । उनके सदन में रहने से लगता था कि एक मजबूत शख्सियत इस कुर्सी पर बैठी है ।

मान्यवर, होता था हमारा उनके साथ में बात करना । एक बार सब बहुत नाराज हो गये थे सदन में और जब चेम्बर में उनसे बात हुई थी तो उन्होंने एक ऐसे जुमले का जिक्र किया जिससे तकरीबन सभी की आंखे नम हो गयीं । फिर उसके बाद से कृष्णकान्त जी की मौजूदगी में किसी ने कोई सख्त बात नहीं कही ।

मान्यवर, जिन्दगी के कुछ लम्हात हर शख्स के लिए कुछ ऐसे होते हैं कि यदि उसका दिल पत्थर भी है तो वह बात उसकी पत्थर दिल पर खुद जाती है और वही बात हमारे दिलों में उनकी खुदी हुई है । मान्यवर, इस तरह से दुनियां से उनका चला जाना और जिन हालात में उनको दिल का दौरा पड़ा वह

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

उनकी जिन्दगी के लिए द्योतक बन गया और वह जो घटना है वह हम राजनीति में काम करने वाले लोगों के लिए एक पैगाम भी है और हमारे लिए वह सीखने-समझने की बात भी है और मान्यताओं को पहचानने की जरूरत भी है। मान्यवर, उनके निधन से मैं दिल से दुखी हूं। जाहिर है वे लाखों-करोड़ों लोग भी जिनके साथ उन्होंने काम किया होगा, एक पढ़ी-लिखी हैसियत में काम किया और दबे-कुचले लोगों के लिए काम किया और उस जमाने से काम किया जब देश गुलाम था। गुलामी की बेड़ियों से लेकर आजादी से आज तक के इस सफर को पूरा करने वाले श्री कृष्ण कान्त आज हमारे बीच नहीं रहे। वह सबसे ऊंची कुर्सी पर रहते हुए, सम्मानजनक स्थान पर रहते हुए दुनियां से चले गये और ऐसे हालात में चले गये जो हम लोगों के लिए एक पैगाम छोड़ कर चले गये।

मान्यवर, मैं अपनी तरफ से अपने दल की तरफ से और विपक्ष की तरफ से आप से गुजारिश करूंगा कि हम लोगों की शोक-भावनाएं उनके परिवार तक जरूर पहुंचवा दें कि हम उनके गम में हिस्सेदार हैं और मालिक से दुआ करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति दें और उनसे अच्छा बदल फरहाम करें।

मान्यवर, इसी के साथ मैं श्री बी०डी० जत्ती जी के निधन पर अपनी संवदेनाएं व्यक्त करते हुए यह आपसे दरख्वास्त करूंगा कि हमारी, हमारे दल की और विपक्ष की शोक संवेदनाएं और उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। मान्यवर, उनका निधन 7 जून, 2002 को नब्बे साल की एक अच्छी उम्र पाने के बाद, वह इस दुनिया से रूखसत हो गये। उनका जन्म 10 जनवरी, 1912 को हुआ था। यह वह जमाना था जब पूरा मुल्क मायूसी और गुलामी के दौर में डूबा हुआ था। 1912 में आजादी की तहरीक ने बहुत जोर नहीं पकड़ा था। उस जमाने के यह ऐसे लोग थे जिनके दिल में आजादी का जज्बा था। ऐसे लोगों के बारे में यह जानने की जरूर नहीं है कि वे किस दल से जुड़े हुए लोग थे, बस इतना ही जानने की जरूरत है कि वे ऐसे धरोहर थे जिन्होंने देश के लिए काम किया।

मान्यवर, आज ऐसे जमाने में जहां लोगों को अपनी जिन्दगी ही नजर आती है, न समाज नजर आता है, न देश नजर आता है ऐसे लोगों से हम सीख ले सकते हैं। मान्यवर, वे ऐसी शख्सियत के मालिक थे पर, यह जरूर है कि उनका कद छोटा जरूर था, जिस्म हल्का जरूर था।

मान्यवर, 1977 में जब इमरजेन्सी का दौर था और बहुत से लोग जेल के सींखचों के पीछे थे उस समय वे देश की बड़ी कुर्सी पर बैठे थे। मान्यवर, उनका जीवन हम सभी के लिए एक यादगार है। मान्यवर, फिर एक बार कहूंगा कि इन गुजर गये लोगों से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए और हमें आज देश के लिए, समाज के लिए और अपनी जिन्दगी से ज्यादा दूसरों की जिन्दगी की हिफाजत के लिए कटिबद्ध होने की जरूरत है। मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से और विपक्ष की तरफ से आपसे दरख्वास्त करूंगा कि हमारी यह संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। मालिक से दुआ करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनसे अच्छा बदल फरहाम करें।

*आवास, नगर विकास, पर्यटन, श्रम, संस्थागत वित्त, दुग्ध विकास, पशुधन, वैकल्पिक ऊर्जा मंत्री (श्री लालजी टण्डन)–

मान्यवर, आजादी के बाद जिन लोगों ने नैतिक मूल्यों का और एक आदर्श चरित्र का नमूना प्रस्तुत किया था, उन चन्द लोगों में स्वर्गीय कृष्णकान्त जी, स्वर्गीम जत्ती जी ये सब लोग थे। यह दूसरी पीढ़ी

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

थी जिसने मूल्यों की राजनीति की थी । व्यक्ति के पदों पर बैठे होने का मतलब नहीं है, उसका योगदान क्या रहा है समाज और देश के निर्माण में उसके आधार पर उसका आंकलन किया जा रहा है अगर इस दृष्टि से देखते हैं तो वास्तव में देश ने बहुत कुछ खो दिया है । अब तीसरी पीढ़ी पर यह जिम्मेदारी है कि उस परम्परा को बनाये रखने के लिए हम उनसे प्रेरणा लेते रहे । कोई भी समाज अपने अंग्रेजों से ही प्रेरणा लेता है और इन सब के जो कृतित्व हैं वह इतिहास लिखेगा और हमें वह प्रेरणा देता रहेगा हमेशा। इन शब्दों के साथ मैं उनके चरणों में अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

और आगे जत्ती जी का है ।

श्री लालजी टण्डन–

मान्यवर, जत्ती जी के बारे में मैंने शुरू में कहा था मेरा आशय था दोनों का । मान्यवर, स्वर्गीय कृष्णकान्त जी और स्वर्गीय बी०डी० जत्ती जी के चरणों में अपनी और अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि देता हूं और उनको प्रणाम करता हूं ।

* श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष जी, आज सदन की एक ऐसी तारीख है जब हम एक साथ देश के पूर्व उपराष्ट्रपतियों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए खड़े हुए हैं । मान्यवर, यह विधि का विधान है कि जो आता है उसे एक दिन जाना ही होता है लेकिन कुछ लोगों की जिन्दगी का सफर ऐसा होता है जो आने वाले लोगों की प्रेरणा का श्रोत बन जाया करता है । आज जिन दो महापुरुषों का निधन हुआ है आने वाली पीढ़ियां जब उनको याद करेंगी तो श्रद्धा के साथ उनका सर झुका हुआ होगा । ये वे लोग थे जिन्होंने देश को आजादी दिलाई और उसके निर्माण में एक मजबूत योगदान दिया । इनमें तीन समानता थी सिर्फ एक ही समानता नहीं है एक तो आज के दिन हम उत्तर प्रदेश की विधान सभा में दोनों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं और दूसरा यह कि दोनों उपराष्ट्रपति ही रहे राष्ट्रपति नहीं बन पाये और तीसरा यह कि जिस समय ये चुने गये उस समय उनकी सरकारें नहीं रही । राज्यसभा में जो रहे हैं हमारे सम्मानित सदस्य ये जानते हैं कि कृष्णकान्त जी पूरे अपने काल में और जत्ती साहब लगभग एक लम्बे कार्यकाल में राज्यसभा के सभापति के रूप में संचालन करते रहे । चूंकि सरकारें अल्पमत में थी, लोकसभा में बहुमत था लेकिन राज्य सभा में जत्ती साहब के कार्यकाल में सरकार अल्पमत में थी और कृष्णकान्त जी के कार्यकाल में भी सरकार अल्पमत में थी । सरकार जब अल्पमत में हो किसी सदन में तो उस समय पीठासीन अधिकारी का दायित्व बढ़ जाता है और उसकी क्षमता व योग्यता का इम्तिहान होता है । इन दोनों उपराष्ट्रपतियों ने राज्यसभा के सभापति के रूप में अपने दायित्वों का निर्वाह किया है जो विरले लोग किया करते हैं, संविधान के ज्ञाता बी० डी० जत्ती जी नगरपालिका के साधारण सदस्य से लेकर उपराष्ट्रपति भवन तक पहुंचे । प्रदेशों के मुख्य मंत्री के रूप में, मंत्री के रूप में, राज्यपाल के रूप में तमाम प्रदेशों की सेवाएं उन्होंने की लेकिन सबसे बड़ी सेवा यह थी कि उन्होंने वह रास्ता दिखाया कि साधारण परिवार का व्यक्ति भी उपराष्ट्रपति बन सकता है । मान्यवर, उनके प्रखर नेतृत्व की क्षमता ही नहीं थी, क्रान्ति की ज्वाला थी । उनके निधन से देश ने एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ, एक बहुत बड़े इंसान, खूबसूरत तथा प्यारे इंसान को खो दिया है । आप मेरी और मेरे दल की शोक-संवेदनाओं को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

* ग्रामीण अभियंत्रण सेवा मंत्री (श्री कौकब हमीद)–

श्री कृष्ण कांत जी, भारत के उप राष्ट्रपति का देहान्त 75 साल की उम्र में हो गया, वह एक छोटे से गांव में अमृतसर जिले के रहने वाले थे। मान्यवर, वह राज्य सभा, लोक सभा और राज्यपाल, आन्ध्र प्रदेश के रूप में रहे हैं और यह वह शख्सियत हैं जिनका नाम इतिहास में हमेशा रहेगा। आजादी की लड़ाई से लेकर आज की राजनीति तक में उनका नाम स्पष्ट शब्दों में रहा है। मान्यवर, मैं चाहूंगा कि मेरे और मेरे दल की तरफ से शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। श्री बी० डी० जत्ती जी, जिनका देहान्त 90 साल की उम्र में हुआ, उन्होंने थोड़े दिन के लिए राष्ट्रपति के रूप में भी काम किया। 1912 में जब वह पैदा हुआ मान्यवर, उस दौर में हिन्दुस्तान गुलामी में ही नहीं एक गम्भीर अवस्था में था। महोदय उनके न रहने से देश खोखला हो जायेगा। मैं चाहूंगा मैं और मेरे दल की ओर से मेरे इन लफ्जों को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, स्वर्गीय महामहिम उप राष्ट्रपति श्री कृष्णकांत जी और स्वर्गीय महामहिम उपराष्ट्रपति के पद पर रह चुके श्री बी० डी० जत्ती जी के लिए जो दुःख माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष ने, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी ने, माननीय नेता राष्ट्रीय लोकदल ने व्यक्त किये हैं मैं उनके साथ अपने और अपने दल के विचारों को सम्बद्ध करता हूं। इन दो महान विभूतियों के उठ जाने से हम सब दुःखी हैं, देश की बड़ी भारी क्षति हुई है। जो पुरानी पीढ़ी है जिसने देश की आजादी की लड़ाई लड़ी एक-एक करके धीरे-धीरे समाप्ति की ओर जा रही है। वह एक ऐसी पीढ़ी रही है जो आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देने में सक्षम है। श्री कृष्णकांत जी से मेरी मुलाकात एक बार हुई थी। मुझे याद है कि एक बार उन्होंने हमको केवल 20 मिनट का समय निर्धारित किया था लेकिन वार्ता कुछ और प्रारम्भ हो गयी कुछ हमारी ओर से कुछ उनकी ओर से कि वार्ता में 20 मिनट के बजाय 1 घण्टा 20 मिनट का समय हमें मिला। इससे यह छाप पड़ती है कि वह एक सफल राजनेता ही नहीं बल्कि एक श्रेष्ठ स्तर के साहित्यविद् थे। और इससे भी ऊपर, उनके अन्दर जो दर्शन देखने को मिला, वह अध्यात्म की नीतियों तक मिला।

ऐसे व्यक्ति कम होते हैं, जिनके अन्दर एक साथ कई-कई गुण होते हैं, वह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, प्रतिभाशाली थे, देश की आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया, देश सदैव उनका ऋणी रहेगा। अपने व्यवहार से कहिये, अपने सरल व्यक्तित्व से कहिये, जो भी उनके सानिध्य में आता था, वह बिना प्रभावित हुए नहीं लौटा होगा। उनके निधन के बाद जो रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसका भरा जाना अगर असंभव नहीं है तो भी कठिन बहुत है। मैं अपनी ओर से अपने दल की ओर से श्री कृष्णकांत जी के प्रति बड़े आदर के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी यह श्रद्धांजलि उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

इसी कड़ी में स्वर्गीय बी० डी० जत्ती जी, उनके बारे में जैसा प्रमोद जी ने कहा, वह नगरपालिका वार्ड से चुनकर उपराष्ट्रपति के पद तक पहुंचे और कुछ समय के लिए राष्ट्रपति के पद पर भी काम किया। निश्चित तौर पर नई पीढ़ी के लिए यह प्रेरणाप्रद बात होगी, इससे सिद्ध हो गया "क्रिया सिद्धि भवति सत्वे, भोपकरणे" अर्थात् जो बड़े लोग होते हैं; उनकी क्रियाओं की सफलता, उनके पौरुष के

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

आधार पर होती है, सिद्धि के आधार पर नहीं । यह बात श्री जत्ती साहब के व्यक्तित्व से सिद्ध हो जाती है । मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से स्वर्गीय जत्ती जी के प्रति शोक संवेदनायें व्यक्त करता हूं और अपनी तथा अपने दल की श्रद्धांजलि देता हूं । आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की आप कृपा करें ।

*श्री राम स्वरूप सिंह (बिजनौर)–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री कृष्णकांत, उपराष्ट्रपति जी के विषय में जो शोक संवेदनायें नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस आई, भाजपा और लोकदल, राष्ट्रीय क्रान्ति दल ने व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । श्री कृष्णकांत जी का राष्ट्रीय आन्दोलन के बहुत बड़े क्रान्तिकारी प्रहरी के रूप में देश को आजाद कराने में बहुत बड़ा योगदान रहा । देश के आजाद होने के बाद भी वह राजनीति में सक्रिय रहे और उपराष्ट्रपति के पद तक पहुंचते हुए देश की जो सेवायें कीं, वह याद रहेंगी । वह ऐसे होनहार उपराष्ट्रपति थे, जो परिस्थितियों की मझधार में राष्ट्रपति नहीं बन पाये, इसका मुझे बड़ा दुख है । मैं आपसे अपील करता हूं, आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, श्री बी० डी० जत्ती, पूर्व उपराष्ट्रपति भारत के विषय में जो सभी दलों के नेताओं ने शोक संवेदनायें व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और अपनी शोक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । आपसे अपील करता हूं कि दोनों नेताओं ने देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में जो योगदान दिया है, वह ऐतिहासिक रूप में यादगार रहेगा और आने वाले लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और वह इस रास्ते पर चलने का प्रयास करेंगे ऐसी मेरी पूर्ण आशा है । मैं आपसे अपील करता हूं कि मेरे और मेरे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक शोक संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री श्याम सुन्दर शर्मा–

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय महामहिम उप राष्ट्रपति श्री कृष्ण कान्त का निधन 27 जुलाई, 2002 को हो गया । इस सन्दर्भ में नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नेता भारतीय राष्ट्रीय लोकदल एवं अन्य दलों के नेताओं ने जो विचारों की अभिव्यक्ति की हैं, मैं भी उनसे अपने विचारों को सम्बद्ध करता हूं । जहां तक इस महान देश भक्त के बारे में जो विचार आये हैं, वे महान शिक्षाविद, महान संसद विद, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे उनके निधन से एक अपूर्णीय क्षति हुई है । आज सारा राष्ट्र उन्हें श्रद्धांजलि दे रहा है । मान्यवर, मेरा आपसे आग्रह है कि मेरे और मेरे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें।

इसी संदर्भ में स्वर्गीय श्री बी० डी० जत्ती जी, जो उपराष्ट्रपति रहे हैं, उनके बारे में जो विचार दलीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं, मैं भी उनसे अपने विचारों को सम्बद्ध करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और आप से अनुरोध है कि उनके परिवार तक शोक संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

श्री शंख लाल मांझी–

मान्यवर, परतन्त्र भारत में जन्म लेकर और स्वतंत्र भारत में उच्च और सर्वोच्च कुर्सी तक पहुंचने वाले महान नेताओं के दिवंगत होने के उपलक्ष में नेता प्रतिपक्ष, नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता लोकतांत्रिक कांग्रेस, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी, नेता जनता पार्टी, नेता कांग्रेस पार्टी और अन्य नेताओं ने जो शोक संवेदना व्यक्त की है, उनके विचारों के साथ मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। मैं अपनी और अपने दल की ओर से इन महान विभूतियों के निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। मान्यवर, बी० डी० जत्ती साहब का जन्म बीजापुर जिले में सवाल्गी गांव में हुआ था। आपने बी० ए०, एल० एल० बी० करने के बाद नगर पार्षद के रूप में अपने राजनैतिक कैरियर की शुरुआत की। महाराष्ट्र में तत्कालीन बम्बई सरकार में मुख्य मंत्री के संसदीय सचिव के रूप में उन्होंने काम किया, तत्कालीन मैसूर राज्य के मुख्य मंत्री तथा भूमि सुधार समिति के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने समाज में दबे-कुचले लोगों और भूमिहीनों के उत्थान के लिए काफी योगदान किया था। उन्होंने उप राष्ट्रपति और 1977 में कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में भी देश की सेवा की। भगवान उनकी आत्मा को शन्ति प्रदान करे। मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से शोक-संवेदनायें व्यक्त करता हूं।

माननीय कृष्ण कान्त जी जिनका जन्म पंजाब के तरन-तारन जिले में हुआ था। उन्होंने देश की आजादी के आन्दोलन में सक्रिय योगदान किया था। वह जेल भी गये थे और देश को आजाद कराने से लेकर के आजाद भारत में देश की सर्वोच्च कुर्सी उप राष्ट्रपति तक पहुंचे थे। तमाम भूमि सुधार, महिला अधिकार के प्रति इन तमाम सुधारों के लिए उन्होंने विशेष योगदान किया था। ऐसी महान विभूतियां आज हमारे बीच में नहीं हैं। इस सदन के माध्यम से मैं आपसे गुजारिश करता हूं, निवेदन करता हूं कि हम सभी की गहरी शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

* श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी, भारत के उपराष्ट्रपति कृष्णकांत तथा पूर्व उपराष्ट्रपति बी० डी० जत्ती के प्रति शोक संवेदनायें जो माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता कांग्रेस आई, माननीय नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी तथा अन्य दल के नेताओं ने जो शोक संवेदनाएं व्यक्त की है, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं माननीय स्वर्गीय कृष्णकान्त जी का हम लोगों से विशेष लगाव था। वह हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता भी रहे और 1977 से लगातर हम लोगों के सम्पर्क में रहे। ऐसे एक महान राजनीतिक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति, समाज सुधारक, उच्च कोटि के बुद्धिजीवी हमारे बीच में नहीं रहे। इससे देश को बड़ा ही नुकसान हुआ राजनीति के उच्च मान्य सिद्धान्तों को अपना कर ये लोग समाज को एक सच्चा रास्ता दिखलाने का काम किया। आजीवन साधारण व्यक्ति की तरह रहन-सहन के अलावा राजनीतिक उलझनों में उनका समाधान का रास्ता निकालना तथा सत्ता पक्ष के अन्यायपूर्ण कार्यों का विरोध करना उनके जीवन का अंग रहा। कृष्ण कान्त जी हमेशा सादा जीवन व्यतीत किये और उन्होंने राजनीति में आजादी की लड़ाई के समय से ही प्रवेश

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

करके उप राष्ट्रपति के उच्च पद पर पहुंच करके भी ऐसी सादगी भरी जिन्दगी जी थी और इसे कभी भी नहीं छोड़ा । इसी प्रकार बी० डी० जत्ती जी एक उच्च कार्यकर्ता के रूप में राजनीति में प्रवेश करके महामहिम राज्यपाल, मुख्य मंत्री तथा मंत्री के रूप में उन्होंने देश की सेवा की है, वह अविस्मरणीय रहेगा।

इन दोनों महान नेताओं के हमारे बीच से चले जाने के कारण देश की राजनीतिक परिस्थितियों में शून्यता सी महसूस की जाएगी । मैं इस अवसर पर अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से स्वर्गीय श्री कृष्ण कान्त तथा स्वर्गीय श्री बी० डी० जत्ती जी को अपने तथा अपनी पार्टी की तरफ से शोक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा आपसे आग्रह करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री संजय गर्ग–

माननीय अध्यक्ष जी, महामहिम उप राष्ट्रपति श्री कृष्ण कान्त जी और पूर्व उप राष्ट्रपति श्रद्धेय श्री बी० डी० जत्ती जी के निधन पर यहां पर माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, एवं मा० नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता समाजवादी जनता पार्टी तथा अन्य दलों ने जो अपने विचार रखे हैं, उनसे सम्बद्ध करते हुए मैं इन दोनों महान नेताओं को भावभीनी व शोक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा महामहिम श्रद्धेय कृष्णकान्त जी जिनका देहान्त उप राष्ट्रपति रहते 27 जुलाई, 2002 को हुआ था, जिनकी आयु मात्र 75 वर्ष थी । एक समाजवादी चिन्तक के रूप में जिन्होंने भारत की आजादी के आन्दोलन में सक्रिय भूमिका अदा की थी ।

भारत छोड़ों आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाकर गांधी जी के नेतृत्व में न जाने कितनी बार जेल भी गये । वह एक प्रखर समाजवादी चिन्तक थे । उन्होंने मजदूरों के हितों की लड़ाई लड़ी, भूमि सुधार के प्रति उनकी चिन्ता थी, महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई को विभिन्न मंचों पर रखने का काम किया । वह 1990-97 तक आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल भी रहे उसके बाद स्वस्थ संसदीय परम्पराओं की एक मिसाल राज्य सभा में कायम करने का काम किया । ऐसे महान नेता के असामायिक निधन पर पूरा राष्ट्र इस महान क्षति को कभी भर नहीं पायेगा । आपकी उर्दू कविता के प्रति भी विशेष रुचि थी जो विभिन्न अवसरों पर विचारों की अभिव्यक्ति के रूप में सामने आयी है ।

इसके साथ ही पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती का निधन 7 जून, 2002 को बैंगलौर में हो गया । आपकी आयु 90 वर्ष की थी । उन्होंने विभिन्न पदों पर रहकर राष्ट्र की सेवा की । वे पूर्ववर्ती जामखंडी रियासत के विधान मण्डल के सदस्य तथा तीन वर्षों तक जामखंडी राज्य के मुख्य मंत्री रहे । वे तत्कालीन बम्बई राज्य सरकार के मुख्य मंत्री के संसदीय सचिव रहे । विभिन्न पदों पर रहने के बाद मैसूर राज्य के मुख्य मंत्री पद पर भी रहकर इस राष्ट्र की खिदमत की । इसके साथ ही 31 अगस्त, 1974 से 30 अगस्त, 1979 तक भारत के उप राष्ट्रपति पद पर रहे । इन दोनों महान नेताओं के निधन पर पूरा राष्ट्र शोक संतप्त है, नतमस्तक है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन दोनों पवित्र आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दें । मान्यवर, मैं आग्रह करता हूं कि मेरी और मेरे दल की शोक-संवेदनायें उन महान नेताओं के परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें । ॐ शान्ति ।

*श्री महबूब अली–

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री कृष्णकान्त जी जो इस देश के उपराष्ट्रपति रहे तथा स्वर्गीय श्री बी०डी० जत्ती जी जो इस देश के उप राष्ट्रपति रहते हुए देश की सर्वोच्च कुर्सी पर भी विराजमान रहे। उनके प्रति जो विचार माननीया नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नेता जनता दल, नेता कम्युनिस्ट पार्टी तथा दूसरे जिलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। स्व० कृष्णकांत जी ने जिस तरह से देश की सेवा की उससे इस सदन को प्रेरणा लेनी चाहिए। साथ ही हमें इस बात का गर्व है कि पंजाब में रहते हुए भी उन्होंने हमारे प्रदेश में शिक्षा प्राप्त कर इस देश का गौरव बढ़ाया है।

स्वर्गीय बी०डी० जत्ती जी मैसूर राज्य के मुख्य मंत्री, पांडिचेरी के उप राज्यपाल, उड़ीसा राज्य के राज्यपाल, उपराष्ट्रपति, कार्यवाहक राष्ट्रपति रहते हुए एक लम्बी आयु तक देश की सेवा की। आजादी की लड़ाई से लेकर देश के विकास के लिए जो काम किया है उसकी भरपाई करना मुश्किल है। आज उनके विचारों और कार्यों से देश का विकास हुआ है। हम सभी सम्मानित साथियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। अध्यक्ष जी, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक भेजने का कष्ट करें।

डा० राधा मोहन दास अग्रवाल–

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय बी०डी० जत्ती जो इस देश के उपराष्ट्रपति तथा कार्यवाहक राष्ट्रपति रहे हैं उनके प्रति जो विचार हमारे माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं उससे अपने को जोड़ता हूं। उप राष्ट्रपति कृष्णकान्त जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करूंगा। व्यक्ति की पहचान पैदा कब हुआ और उसकी मृत्यु कब हुई, से नहीं होती है, पहचान तो यह होती है कि उसके विचार क्या थे और उन विचारों पर दृढ़तापूर्वक चलकर कितना जीवन जिया।

माननीय कृष्णकान्त जी के साथ हम लोगों, माननीय चन्द्रशेखर और माननीय रामधन जी ने काम किया है उनको हम लोग बहुत नजदीक से जानते थे। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल रहते हुये उनके जो लेख लगातार छपते रहे, मेन स्ट्रीम में हुये एप्रोच पेपर कंसेंशियल नेशनलिज्म एवं सेक्यूलरिज्म में अगर उनको पढ़ा जाय तो यह पता चलता है कि उनके विचार राष्ट्रीय संदर्भ में क्या थे ? जब बंगाल का बंटवारा हुआ तो वह दुखी हुये। जब 1947 में यह देश बंटा उस समय हमारी राष्ट्रीय भावना कमजोर थी और हम इस बंटवारे को रोक नहीं पाये। आज की राजनीतिक व्यवस्था में जो समस्यायें आयी हैं उनसे स्वर्गीय कृष्णकान्त जी दुखी थे। उनका कहना था कि हमने पाश्चात्य आधारित लोकतंत्र को अपनाया है जो हमारे बाहुल समुदाय, बहुजातीय देश के लिये उचित नहीं है। हमारी निर्वाचन प्रक्रिया ऐसी है कि एक मत एक्सट्रा यदि कोई पा जाता है तो वह विजेता कहा जाता है। माननीय कृष्णकान्त जी का कहना था कि यह फर्स्ट पास्ट द पोस्ट का कांसेप्ट आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिये ठीक नहीं है। उनका लोकतंत्र का कांसेप्ट, उनकी अवधारणा नकारात्मक मत की थी। उनका मत था कि जब तक नकारात्मक मत को अवधारणा को नहीं अपनाया जायेगा तब तक लोकतंत्र इस प्रकार की समस्याओं से ग्रसित रहेगा। जनता को नकारात्मक मत देने का अधिकार देने की प्रक्रिया को अपने संविधान से जोड़ना होगा। 4-5 दिन पहले निर्वाचन आयोग ने भी माननीय कृष्णकान्त जी के नकारात्मक मत की

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

अवधारणा पर ध्यान दिया है। इसलिये ऐसे महान व्यक्ति के विचारों को स्वीकार करना चाहिये। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति दे। सदन में व्यक्त विचारों से अपने को संबद्ध करते हुये मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं।

* श्री दीनानाथ कुशवाहा–

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय नेता कांग्रेस और माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी के विचारों से मैं अपने को जोड़ते हुये माननीय कृष्णकान्त जी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय एक ऐसा समय था जब सार्वजनिक जीवन में गिरावट आयी थी और आज से 2 साल पहले जब प्रदेश की राजधानी में माननीय कृष्णकान्त जी उप राष्ट्रपति होकर आये थे और उन्होंने इस संबंध में टिप्पणी की थी, प्रदेश की राजधानी लखनऊ में "सार्वजनिक धन के दुरुपयोग पर विधायी नियंत्रण" का जो सेमिनार हुआ था उसमें मुख्य अतिथि के रूप में राजधानी में आये थे और उन्होंने टिप्पणी की थी कि आज हमारी सार्वजनिक जीवन इतना गिर गया है, चूंकि आज माननीय कृष्णकान्त जी के प्रति हम अपनी संवेदना व्यक्त कर रहे हैं इसलिये उन बातों में न जाकर मैं कहना चाहता हूं कि 26 जून, 1975 को इस देश में आपात स्थिति की घोषणा की गयी थी तो श्री चन्द्रशेखर, श्री रामधन, श्री मोहन धारिया और श्री कृष्णकान्त जी ने कांग्रेस पार्टी में रहते हुये उन नीतियों का विरोध करते रहे और लगातार 22 महीने की आपात स्थिति के दौरान मीसा और डी०आई०आर० के अन्तर्गत जेलों में जाने का काम किया। जब हम इतिहास के पन्नों को उलट कर देखते हैं। हमारे देश में ऐसे विचारक आए हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा से अपने विचारों से देश को और प्रदेश को नई दिशा देने का काम किया वे ऐसे विचारकों में श्री कृष्णकान्त जी थे उनके विचार हमारे लिए अनुकरणीय हैं हमें अपने सार्वजनिक जीवन में उनके विचारों को उतारना चाहिए. विचार से बढ़कर हिन्दुस्तान में ही नहीं दुनिया के किसी मुल्क में कोई बड़ा नहीं होता है। इसलिये उनके निधन से देश को अपूरणीय क्षति हुई है। उस क्षति को हम लम्बे समय तक नहीं भर सकते हैं। अध्यक्ष महोदय हम आज इस सदन में दो महान विभूतियों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त कर रहे हैं। श्री बी०डी० जत्ती 1974 से लेकर 1979 तक उपराष्ट्रपति रहे ऐसा समय भी आया तब श्री फखरुद्दीन अली अहमद जो राष्ट्रपति थे उनके निधन पर श्री बी०डी० जत्ती कार्यवाहक राष्ट्रपति भी रहे। उनके निधन पर हम सब दुखी हैं दो महान विभूतियां जो आज इस दुनियां में नहीं हैं। उनके विचार हमारे लिए अनुकरणीय हैं। ऐसे कुशल राजनीतिज्ञ और विचारकों के निधन पर मैं गहरी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध है कि शोक संतप्त परिवार तक हमारी और हमारे दल की शोक संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष–

भारत के उपराष्ट्रपति कृष्णकान्त जी एवं पूर्व उप राष्ट्रपति श्री बासप्पा दानप्पा जत्ती के निधन के अवसर पर इस सदन में माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष एवं अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। दिनांक 27 जुलाई, 2002 को एकाएक जब आकाशवाणी और दूरदर्शन पर यह समाचार प्रसारित हुआ कि उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त जी का निधन हो गया है तो सारा देश शोक की लहर में डूब गया। हम सबको स्तब्ध करने वाला यह

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

समाचार था । किसी ने यह नहीं सोचा था कि इतने शीघ्र ही हमें उनके संसदीय राजनीतिक जीवन और प्रशासनिक अनुभवों का लाभ नहीं मिल सकेगा व हम उससे वंचित हो जायेंगे । इस सदन के बहुत से ऐसे सदस्य होंगे जो श्री कृष्णकान्त जी से व्यक्तिगत रूप से परिचित होंगे । कुछ साहित्यिक समारोहों में व कुछ गोष्ठियों में मेरी भी उनसे व्यक्तिगत मुलाकात हुई थी मैंने देखा कि बहुत ही सौम्य, बहुत ही प्रतिभावान, समस्याओं पर गहरी व पैनी दृष्टि रखने वाले व्यक्ति श्री कृष्णकान्त जी थे मैंने कभी भी उनको उत्तेजित होते नहीं देखा । अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने बहुत ही कुशलतापूर्वक राज्य सभा की कार्यवाही का संचालन भी किया । मुझे स्मरण है कि जब युवा तुर्क के रूप में प्रसिद्ध नेता के रूप में वह देश में प्रख्यात थे और इस देश के नौजवान मार्गदर्शन हेतु उनकी ओर दृष्टि लगाए रहते थे । उन्होंने कभी अपने दायित्व से मुकरने का प्रयास नहीं किया । उनके निधन से हम सब दुखी हैं । एक बहुत ही कुशल समाजसेवी राजनीतिज्ञ और सांसद हमने खो दिया है ।

पूर्व उप राष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती अपने सरल और मृदु स्वभाव के कारण विख्यात थे । लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रथम सोपान से उठकर उप राष्ट्रपति के पद पर जाना कोई साधारण बात नहीं थी । लेकिन अपनी निष्ठा से अपने समर्पण के भाव से व न केवल देश के उपराष्ट्रपति हुए वरन कुछ समय तक उन्होंने राष्ट्रपति के पद का भी कार्यभार संभाला । उनके निधन से हम सब दुखी हैं । इस सदन में दो माननीय नेताओं के प्रति जो शोकोद्गार व्यक्त किये गये हैं वह मैं उनके परिवार तक पहुंचा दूंगा अपनी ओर से मैं भी श्रद्धासुमन व इस सदन की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । आपसे अनुरोध है कि उनको श्रद्धांजलि देने के लिए दो मिनट का मौन धारण करें ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्यगण श्री राम चन्दर, श्री विष्णु दयाल वर्मा, श्री राम प्यारे शुक्ल, श्री कन्हैया लाल सोनकर, श्री शिव कुमार पाण्डेय, श्री नगीना सिंह, श्री राम सिंह चौहान, श्री मोहम्मद मसूद खां, तथा श्री हरिपाल सिंह शास्त्री के निधन पर शोकोद्गार

श्री अध्यक्ष–

दिनांक 24 अप्रैल, 2002 से लेकर दिनांक 2 अगस्त, 2002 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के 9 भूतपूर्व सदस्यों का निधन हो गया । विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री रामचन्द्र का 24 अप्रैल, 2002 को निधन हो गया । वे लगभग 77 वर्ष के थे । उनका जन्म 1 जून, 1925 को ग्राम मलोखर, तत्कालीन जिला वाराणसी में हुआ था । वे 1980 तथा 1985 के सामान्य निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र मुगलसराय, जिला वाराणसी से कांग्रेस (आई०) के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे । वे एक कुशल राजनीतिज्ञ थे तथा वे सदैव कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध रहे । वे जिला परिषद् मुगलसराय के सदस्य, ग्राम सभा मलोखर के प्रधान, नियमताबाद ब्लाक के ब्लाक प्रमुख, साधन सहकारी समिति, मुगलसराय तथा सहकारी संघ, मुगलसराय के अध्यक्ष आदि पदों पर आसीन रह चुके थे । वे ब्लाक कांग्रेस कमेटी (आई०) नियमताबाद के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा के उपाध्यक्ष भी रहे थे ? संगठन एवं जनसेवा में उनकी विशेष रुचि थी । श्री राम चन्दर के निधन से जनपद चन्दौली ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है ।

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री विष्णु दयाल वर्मा का 83 वर्ष की आयु में 13 मई, 2002 को हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया । इनका जन्म 2 जनवरी, 1919 को हुआ था । इन्होंने एम० ए०, एल० टी० तक शिक्षा ग्रहण की थी । वे सर्वप्रथम 1952 में प्रजा समाजवादी दल के सदस्य के रूप

में विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । इसके बाद 1980 में निर्वाचन क्षेत्र जसराना, तत्कालीन जिला मैनपुरी से कांग्रेस (आई०) के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री वर्मा राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेने के फलस्वरूप मैनपुरी तथा एटा कारावास में बन्दी रहे । वे प्रधानाचार्य एवं संस्थापक, लोक राष्ट्रीय इण्टर कालेज, जसराना, उप प्रधान जिला आर्य समाज सभा एवं प्रधान तथा महासचिव लोधी क्षत्रिय महासभा आदि पदों पर रह चुके थे । उन्होंने "भारतीय इतिहास के अपेक्षित पृष्ठ" नामक पुस्तक प्रकाशित करायी । कृषि एवं शिक्षा संबंधी विषयों में उनकी विशेष रुचि थी । श्री वर्मा के निधन के बाद जनपद फिरोजाबाद ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है ।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व सदस्य श्री राम प्यारे शुक्ल का 75 वर्ष की आयु में दिनांक 24 मई, 2002 की रात्रि में निधन हो गया । इनका जन्म 4 जनवरी, 1927 को हुआ था । इन्होंने स्नातकोत्तर, एल० एल० बी० तक शिक्षा ग्रहण की थी । वे सर्वप्रथम 1967 में निर्वाचन क्षेत्र सुल्तानपुर से जनसंघ के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । तत्पश्चात् वर्ष 1969 तथा 1991 में पुनः विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री शुक्ल ने वर्ष 1954 से दीवानी कचहरी सुल्तानपुर में वकालत प्रारम्भ की थी । वे वर्ष 1983 से 1989 तक माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायमूर्ति रहे । एक निष्पक्ष न्यायाधीश की भूमिका उन्होंने पूरी तरह निभाई वह अधिवक्ताओं में बहुत लोकप्रिय रहे । वह वर्ष 1984 से 1989 तक के बीच में जिला आगरा, अलीगढ़, मथुरा, मैनपुरी, एटा, इटावा, फर्रुखाबाद के प्रशासनिक न्यायाधीश रहे । विधान सभा की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सभापति रहे एवं जिले के अनेक विद्यालयों की प्रबन्ध समितियों के सदस्य तथा बार एसोसियेशन, सुल्तानपुर के लगातार तीन बार अध्यक्ष रहे । उनके निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ, समाजसेवी एवं न्यायविद खो दिया है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री कन्हैया लाल सोनकर का निधन 29 मई, 2002 को हो गया उनकी अवस्था 70 वर्ष की थी । इनका जन्म 24 अगस्त, 1932 को इलाहाबाद में हुआ था । उन्होंने सिटी ए० वी० इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद में शिक्षा ग्रहण की थी । श्री सोनकर जी 1969, 74, 77 निर्वाचन क्षेत्र चायल, जिला इलाहाबाद से जनसंघ पार्टी, कांग्रेस पार्टी तथा जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री कन्हैया लाल सोनकर एक योग्य सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता थे । वह इलाहाबाद जिला कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य, अखिल भारतीय खटिक महासभा के महामंत्री, श्री बद्रीनाथ केदारनाथ मन्दिर समिति के सदस्य तथा केन्द्रीय कारागार प्रोबेशन बोर्ड के सदस्य रहे । वे इलाहाबाद जिले की कई सामाजिक सांस्कृतिक तथा शैक्षिक संस्थाओं अथवा समितियों के संरक्षक या संयोजक भी रहे । जन सेवा तथा साधु-सन्तों के बीच सत्संग में उनकी विशेष रुचि थी । इनके निधन से जनपद इलाहाबाद ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री शिव कुमार पाण्डेय का निधन लगभग 78 वर्ष की अवस्था में हो गया । श्री शिव कुमार पाण्डेय का जन्म 24 मार्च, 1924 को जिला सुल्तानपुर में हुआ था उन्होंने वर्नाक्यूलर मिडिल तथा वैद्य विशारद की शिक्षा ग्रहण की थी वह 1969 तथा 1974 में निर्वाचन क्षेत्र जयसिंहपुर, जिला सुल्तानपुर से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । श्री शिव कुमार पाण्डेय एक जुझारू एवं संघर्षशील स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने के साथ ही एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समर्पित जनसेवी थे । वह स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में कई बार जेल भी गये, वह ग्राम

सभा के प्रधान, न्याय पंचायत के सरपंच, सहकारी संघ के प्रबन्ध संचालक जिला बोर्ड तथा जिला परिषद् के सदस्य तथा ब्लाक प्रमुख आदि विभिन्न पदों पर रह चुके थे। शिक्षा, कृषि और सार्वजनिक निर्माण कार्यों से उन्हें प्रेम था। उनके निधन से जनपद सुल्तानपुर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री नगीना सिंह का 13 जून, 2002 को लगभग 86 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। श्री नगीना सिंह जी का जन्म 1916 में ग्राम कथरिया, जिला बलिया में हुआ था, उन्होंने बी० ए० तक शिक्षा ग्रहण की थी। यह 1969 में निर्वाचन क्षेत्र कोपाचीट, जिला बलिया से संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वह 1952 से 1957 तक लोक सभा के सदस्य भी रहे। श्री नगीना सिंह ने विद्यार्थी जीवन में स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। 1945 में जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य के रूप में रहे। कई आन्दोलनों में उन्होंने भाग लिया। वह बलिया जिला संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय महासमिति के डेलीगेट रहे। वह श्री कमलापति त्रिपाठी मंत्रिमण्डल में राज्य मंत्री रहे। संगीत बागवानी तथा धार्मिक ग्रन्थों में उनकी विशेष रुचि थी। श्री नगीना सिंह के निधन से जनपद बलिया ने एक कुशल राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री राम सिंह चौहान का निधन आगरा में 15 जून, 2002 को 91 वर्ष की अवस्था में हो गया। इनका जन्म 3 दिसम्बर, 1911 को हुआ था। श्री राम सिंह चौहान वर्ष 1957 में निर्वाचन क्षेत्र एतमादपुर, जिला आगरा से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। यह एक सक्रिय एवं जुझारू स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थी। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई जिसके फलस्वरूप यह कई बार जेल गये। वह समाजवादी नेताओं श्री जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव एवं डा० राम मनोहर लोहिया आदि के निकट रहे उन्होंने आजीवन समाजवादी विचारधारा का प्रचार प्रसार किया। उनके निधन से जनपद आगरा ने एक कुशल राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री मोहम्मद मसूद खां का निधन 3 जुलाई, 2002 को दिल्ली में एक सड़क दुर्घटना में हो गया वह लगभग 74 वर्ष के थे। इनका जन्म 1 जुलाई, 1928 को ग्राम नोनारी, जिला आजमगढ़ में हुआ था। उन्होंने बी० ए०, एल-एल० बी० तक शिक्षा ग्रहण की थी। मोहम्मद मसूद खां 1974 में निर्वाचन क्षेत्र निजामाबाद, जिला आजमगढ़ से भारतीय क्रान्ति दल के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। तत्पश्चात् वह वर्ष 1977 एवं 1985 में पुनः विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए। वह 7 जुलाई, 1998 को उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए। उन्होंने राज्य सभा के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। श्री मोहम्मद मसूद खां के राजनीतिक जीवन की शुरुआत स्वतंत्रता संग्राम के समय छात्र जीवन में जमेतुल उलुमा शाखा के अध्यक्ष से हुई। वह डी० आई० आर० और मीसा के अन्तर्गत अनेक बार जेल गये। इनकी पहचान एक ईमानदार एवं धर्मनिरपेक्ष किसान नेता के रूप में थी। वह श्री राम नरेश यादव मंत्रि मण्डल एवं श्री बनारसी दास मंत्रिमण्डल में मंत्री पद पर रह चुके थे। वह कई सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। वह राष्ट्रीय लोकदल की राज्य संचालन समिति के अध्यक्ष रहे।

इनके निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री हरिपाल सिंह शास्त्री का 02 अगस्त, 2002 को निधन हो गया । वे लगभग 77 वर्ष के थे । श्री हरिपाल सिंह शास्त्री का जन्म 13 मई, 1925 को हुआ था । वे व्याकरणाचार्य, आयुर्वेद भाष्कर तथा सिद्धान्त शास्त्री थे । श्री हरिपाल सिंह शास्त्री वर्ष 1977 के सामान्य निर्वाचन क्षेत्र धामपुर, जिला बिजनौर से जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री हरिपाल सिंह शास्त्री शुरू से ही राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे थे । वे 1959 से 1974 तक जिला सहकारी बैंक के प्रबन्ध संचालक एवं अध्यक्ष, 1967 में उत्तर प्रदेश सहकारी संघ के संचालक, बिजनौर जिला सहकारी संघ के 1960 से 1965 तक संचालक एवं उपाध्यक्ष रहे । वे जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, क्रशर ओनर्स एसोसियेशन के महामंत्री एवं अध्यक्ष तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं के सदस्य अथवा प्रबन्ध समिति में रह चुके थे । वे 1944 से 1967 तक जनसंघ के जिला मंत्री तथा 1970 से 1977 तक कांग्रेस के जिला महामंत्री रहे थे ।

श्री हरिपाल सिंह शास्त्री के निधन से जनपद बिजनौर ने एक कुशल राजनीतिक एवं समाजसेवी खो दिया । हम इन सभी दिवंगत भूतपूर्व सदस्यों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं । हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे । अब हम लोग उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण करेंगे ।

(दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए ।)

अब हम उठते हैं । कल 9 अगस्त, 2002 को 11.00 बजे पुनः बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 12 बजकर 07 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया)

लखनऊ :

दिनांक 8 अगस्त, 2002

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,

सचिव, विधान सभा,

उत्तर प्रदेश ।

पी०एस०यू०पी०–एल० 312 विधान सभा (541)-2003–813 (डी०टी०पी०) ।